युवा रंगमंच, राँची की प्रस्तुति

पूर्णकालिक नाटक

बैरागी मन हारा

परिकल्पना एवं निर्देशन : **बिपिन कुमार**
सहयोग – **अजय मलकानी**
आलेख – **रविकांत मिश्रा** **09334431966**

{मंच पर अंधेरा, बादल की गरजन, बीच–बीच में बिजली का चमकना जिसकी रोशनी में एक युवा संन्यासी पत्थर की मूर्ति की तरह स्थिर खड़ा है। मंच दायीं तरफ डाऊन राइट में एक सुन्दर युवती खड़ी है है। बिजली चमकने पर दृश्य दिखाई देता है। फिर अन्धेरे में विलीन हो जाता बारिश शोर के बीच एक नारी स्वर दूसरा पुरुष स्वर पार्श्व से गूंजता है}

पुरुष स्वर– सत्य की माया
या माया का सत्य
सत्य में है माया
या माया में है सत्य
सत्य से माया को
या माया को सत्य से
कौन पृथक करता है।

मोग की बगिया में खड़े होकर
योग की लालसा
एक और मोग की कल्पना मात्र तो नहीं है?

नारी स्वर– यौवन कमल में लिपटी
प्रचंड ऊर्जा वाली नदी
अपने रस धारा में प्यासी
खड़ी है प्रतीक्षारत
कि वह आये वापस
अपनी मोक्ष की कल्पना से मुक्त होकर
और पी जाये उस रसधारा को
जो मेरे भीतर अब बर्फ सी जमने लगी है
पिघला दे मुझे अपने स्पर्श की अग्नि से?

पुरुष स्वर– परन्तु दो देह, दो तन के बीच
योग और भोग
माया और मोक्ष
खड़े हैं अपने तर्कतीर लेकर
एक दूसरे पर ताने
कौन है सत्य
कौन है भ्रम
सत्य की माया या
माया का सत्य {स्वर विलीन}

{*बादल गर्जन बिजली का चमकना, बारिश के स्वर सब धीरे–धीरे धीमी होने लगते हैं*} ''मंच पर अंधेरा''

{पट्टाक्षेप}

दृश्य – २

{ *गिरी महाराज धीरे–धीरे चलते हुए मंच पर आते हैं। सीढ़ियों के ऊपर बरामदे में खड़े हो जाते हैं तभी पार्श्व से रोने की आवाज* दो औरतें रोते हुए रेवती के पास आती है }

औरत – १ (निक्की)– अरे नाजो, तेरा नाज सहनेवाला चला गया। हाय सुन्दर तेरी इस बन्नी के नाज़ अब कौन उठायेगा?

औरत – २ (ताई)– इसे नहलाओ, धुलाओ, सफेद कपड़े पहनाओ। जानेवाला चला गया।

रेवती – गया। मेरा सुन्दर, चला गया? मैं तो उसके लिए दूध लेने गई थी।

औरत – १ (निक्की)– तुझे होश कहाँ था रेवती, सुन्दर के जाते ही पछाड़ खाकर गिरी तो अब जाकर उठी है।

रेवती – (*रोती है*) चला गया, मुझे छोड़ चला गया। क्या माँगा था मैंने? यही ना कि तू ठीक हो जाय। तू चल दिया। मुझसे बात तक नहीं की, कुछ कहा नहीं। एक बार मुझे मेरे सुन्दर का दर्शन तो करवा देते।

औरत – २ (ताई)– दर्शन करके भी क्या हो जाता? वह तो पहले से ही पता था कि ६ महीने का भी मेहमान नहीं है।

औरत – १ – आए हाय! पहले इसके साज–श्रृंगार उतारो, पत्थर लाओ, चूड़ियाँ तोड़ो। सुहाग की कोई निशानी बदन पर न रहे (*दोनों एक–एक कर गहने उतारती हैं*)

औरत–२ – सफेद कपड़े पहनाओ।

औरत–१– घाट पर पहना दूँगी। पहले इसे लेकर चल {रेवती को लेकर प्रस्थान}

औरत–२– होश कर रेवती, तेरा मरद गया.....

{*पार्श्व से बादल गर्जन, बिजली का चमकना और इसी के साथ नारी स्वर में आलाप*}

{गिरी महाराज का शरीर थोड़ा कांपता है। गहरी सांसें लेना और छोड़ना, फिर अपने को नियंत्रण करने का प्रयास, ऊँ नम: शिवाय का जाप मन ही मन करते हैं। बाहर गिरी महाराज के होंठ हिलते हैं। दो पल बाद गिरी महाराज अपने आप से बोलते हैं। }

गिरी महाराज– आह! नारी जीवन कितनी विडम्बनाओं से भरा है। नारी ही नारी को विधवा बनाने पर तुली है।

{*तभी रेवती हड़बड़ाकर मंच पर आती है। अपने चारों तरफ देखती है फिर मंदिर और गिरी बाबा की तरफ देखती है। दो पल बाद*}

रेवती – झूठे हो... तुम झूठे हो.... झूठे हो तुम, भगवान तुम झूठे हो.... .. सुनते हो, तुम झुठे हो.... अगर यही तुम्हारा सत्य है तो कान खोलकर सुन लो ष्भगवानष तुम दुनिया के सबसे बड़े झूठ हो {*इतना बोल रेवती बच्चों की तरह सुबकने लगती है।*